रॉबर्ट वैनॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 10

यशायाह 28-30

समीक्षा

हमने पिछले सप्ताह घंटे के अंत में यशायाह का एक नया खंड शुरू किया: अध्याय 28 से 35। मैंने उल्लेख किया कि 28 से 35, कई मायनों में, इम्मानुएल की पुस्तक के समानांतर लगता है, जो अध्याय 7 से 12 तक था; और ऐसा लगता है कि अध्याय 28 की सेटिंग, जिसे हमने देखना शुरू किया था, वह देश के नेताओं - भूमि के कुलीनों - की एक सभा को संबोधित था और आपको याद होगा कि पहले छंद में, यशायाह आने वाले फैसले की बात करता है एप्रैम, उत्तरी साम्राज्य - विशेष रूप से उत्तरी साम्राज्य की राजधानी सामरिया पर। उसके पास आलंकारिक भाषा है जो गर्व के उस मुकुट, एप्रैम के पियक्कड़ों की बात करती है; सामरिया के संदर्भ में, लेकिन वह इस ओलावृष्टि से नष्ट हो जाएगा - शक्तिशाली जल की यह बाढ़ - जो असीरिया का संदर्भ है। लेकिन फिर जब आप पद सात पर आते हैं, तो यशायाह अपने शब्दों का ध्यान उत्तर की ओर से उन लोगों पर केंद्रित करता है जो उसके सामने बैठे हैं जब वह कहता है, "परन्तु ये भी दाखमधु और मदिरा के कारण भटक गए हैं, और मार्ग से भटक गए हैं।" - वे दृष्टि में गलती करते हैं, वे निर्णय में चूक जाते हैं।"

यशायाह 28:8-13 कुलीनों ने यशायाह का मजाक उड़ाया - यशायाह ने उत्तर दिया - एक विदेशी भाषा उन्हें सिखाएगी

अध्याय 28, पद 8: "क्योंकि सभी मेजें उल्टी और गंदगी से भरी हैं।" और तब आपको प्रतिक्रिया मिलती है - या तो इन नेताओं ने वास्तव में क्या प्रतिक्रिया दी या कम से कम वे क्या सोच रहे थे - और वह श्लोक नौ है और निम्नलिखित है: "वह किसे ज्ञान सिखाएगा? वह किसको समझाये? उन लोगों के लिए जो दूध से छुड़ाए गए हैं और स्तन की ओर आकर्षित हैं? क्योंकि उपदेश पर उपदेश होना चाहिए, उपदेश पर उपदेश होना चाहिए; लाइन पर लाइन, लाइन पर लाइन; थोड़ा इधर, थोड़ा उधर।" जैसा कि मैंने श्लोक

दस में उल्लेख किया है, हिब्रू में, शब्दों को उनके ध्वनि मूल्य के लिए चुना जाता है: यह है *सेव लेसव, काव लेकाव*, लगभग किसी बच्चे या शिशु के बड़बड़ाने जैसा। तो ये रईस यशायाह का मज़ाक उड़ा रहे हैं: "तुम इस तरह की बचकानी बातें लेकर हमारे पास क्यों आते हो ? आप हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हैं? " और फिर यशायाह की प्रतिक्रिया है, "अजीब होठों और दूसरी जीभ के साथ, यदि आप प्रभु की स्पष्ट शिक्षा को नहीं सुनेंगे, तो वह अजीब होठों और दूसरी जीभ के साथ आपके पास आएगा" - अर्थात् की भाषा असीरिया के विदेशी आक्रमणकारी. और श्लोक 13 कहता है, "तब यहोवा का वचन *काव होगा लेकाव, सेव लेसाव* - यह उस अस्पष्टता की तरह होगा जिसमें आप मुझसे बात करने के लिए मुझ पर आरोप लगा रहे थे। इसलिए पिछले सत्र के अंत में हम यहीं रुके थे। यह हमें पद 13 के माध्यम से सामने लाता है।

यशायाह 284-22 - अश्शूर के साथ यरूशलेम के कुलीनों के गठबंधन को संबोधित

मुझे लगता है कि श्लोक 14 से 22 तक यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जिस पृष्ठभूमि का मैं इस बिंदु तक सुझाव दे रहा हूं वह वास्तव में इस अध्याय को समझने का तरीका है। ध्यान दें कि 14 क्या कहता है - 14 कहता है: "इसलिए, तुम जो यरूशलेम में इन लोगों पर प्रभुता करते हो, हे घृणित मनुष्यों, यहोवा का वचन सुनो।" देखिए, यह संबोधन नेताओं के लिए है: आप लोग जो इन लोगों पर शासन करते हैं - नेता, देश के रईस। इम्मानुएल की पुस्तक, अध्याय 7 से 12 पर वापस जाएँ; यह राजा था, यह आहाज था। अब आप देश के नेताओं के बारे में बात कर रहे हैं। "हे तुच्छ मनुष्यों, जो यरूशलेम के विश्वासयोग्य लोगों पर प्रभुता करते हो, यहोवा का वचन सुनो। क्योंकि तू ने कहा है, हम ने मृत्यु के साथ वाचा बान्धी है, और अधोलोक के साथ हम ने वाचा बान्धी है। जब विपत्ति उमड़ती हुई पार हो जाए, तब वह हम तक न पहुंचे; क्योंकि हम ने झूठ को अपना आश्रय बनाया है; झूठ के तहत हमने खुद को छुपाया है। " यहां फिर से, मुझे लगता है कि आपके पास इन रईसों की सोच का वर्णन है: उनका विचार है कि उन्होंने मृत्यु के साथ यह वाचा बनाई है; वे नरक के साथ सहमत हैं, और मुझे लगता है कि इसका संदर्भ यह है कि उन्होंने असीरिया - अधर्मी राष्ट्र असीरिया - के

साथ गठबंधन किया है - यही उनकी सुरक्षा है। लेकिन उनका विचार है कि *जब असीरियन करीब आएगा तो हमें सुरक्षा मिलेगी क्योंकि हम ने झूठ को अपना आश्रय बना लिया है; हम ने अपने आप को झूठ के तले छिपा रखा है*। इसलिए उन्हें लगता है कि वे सुरक्षित हैं.

परमेश्वर की आधारशिला [मसीहा]

लेकिन पद 16 कहता है, "इसलिये यहोवा यों कहता है, देख, मैं सिय्योन में नेव का पत्थर, परीक्षित पत्थर, बहुमूल्य कोने का पत्थर, पक्की नेव रखता हूं; जो विश्वास करे वह उतावली न करे।"

मुझे लगता है कि 16 जो कह रहा है वह यह है कि भगवान - जो वे सोचते हैं उसके विपरीत - भगवान कहते हैं कि एकमात्र सुरक्षा आधारशिला में है जिसे भगवान ने स्वयं रखा है। और वह क्या है? मुझे लगता है कि इस बिंदु पर हम यही कहेंगे कि यह ईश्वर के प्रावधान में विश्वास है, और केवल उसकी इच्छा ही सुरक्षित है। ईश्वर के प्रावधान में विश्वास ही इज़राइल की एकमात्र सुरक्षा है। "जो विश्वास करता है वह उतावली न करे"; अर्थात् जो विश्वास करेगा वह अधीर न होगा, परन्तु यहोवा पर भरोसा रखेगा। अब, इज़राइल की सुरक्षा के लिए ईश्वर का वह प्रावधान अंततः मसीहा के व्यक्ति और कार्य में अपना केंद्र पाता है। यह वास्तव में यशायाह 7 से 11 में उसी विचार पर वापस जाता है, इम्मानुएल का प्रावधान। इसलिए मुझे लगता है कि यहां आपके पास वह है जिसे आप "एक छिपा हुआ मसीहाई संदर्भ" कह सकते हैं - यह स्पष्ट और स्पष्ट नहीं है, बल्कि एक छिपा हुआ मसीहाई संदर्भ है।

आपके उद्धरणों पर - पृष्ठ 20, यशायाह की भविष्यवाणियों पर जेए अलेक्जेंडर की टिप्पणी के तहत पृष्ठ के मध्य में - पहला पैराग्राफ, जो उनकी टिप्पणी के पृष्ठ 454 से है। छात्र: "फिर कौन सा पेज?" 454. यह उद्धरणों के पृष्ठ 20 पर है, लेकिन वह पहला पैराग्राफ जिसे आप नोट कर सकते हैं वह पृष्ठ 454 से आता है। दुर्भाग्य से, पृष्ठ संख्याएँ इस चीज़ से छूट गई हैं, जहाँ से ये उद्धरण हैं - वे ग्रंथ सूची प्रविष्टि के अंतर्गत हैं लेकिन वे ' दुर्भाग्य से, आप प्रत्येक पैराग्राफ के साथ नहीं हैं... लेकिन वह पहला पैराग्राफ पृष्ठ 454 से है जहां अलेक्जेंडर कहता है, "आप अपने भ्रम में सुरक्षा के लिए भरोसा करते हैं। इसके विपरीत, मैं

एक पक्की नींव डालता हूं और कोई और नहीं डाली जा सकती। यह नींव न तो मंदिर (इवाल्ड), न ही कानून (अम्ब्रेइट), न ही सिय्योन (हित्ज़िग), न ही हिजकिय्याह (गेसेनियस) है, बल्कि मसीहा है, जिस पर इसे नए नियम में बार-बार और स्पष्ट रूप से लागू किया गया है। रोमियों 9:33 - यदि आप रोमियों 9:33 में देखें, तो [यह] कहता है, "जैसा लिखा है: 'देख, मैं सिय्योन में ठोकर खाने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूं; जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।" और 1 पतरस 2:6: "इस कारण पवित्रशास्त्र में भी लिखा है, 'देख, मैं सिय्योन में एक मुख्य कोने का पत्थर रखता हूं - चुना हुआ, बहुमूल्य; जो उस पर विश्वास करेगा, वह भ्रमित न होगा।" और यह निश्चित रूप से ऐसे संदर्भ में है जो स्पष्ट रूप से मसीह का संदर्भ देता है। तो आप फिर से इस प्रश्न में पड़ जाएं कि यशायाह को कितना समझ आया कि यह मसीहा का संदर्भ था? मैं इतना निश्चित नहीं हूं, और मैं इतना निश्चित नहीं हूं कि यशायाह के समकालीनों को स्पष्ट रूप से किसी प्रकार का मसीहाई संदर्भ मिला होगा, लेकिन जो सिद्धांत आप देख रहे हैं वह सत्य है , वही है: भगवान के प्रावधान पर भरोसा करना इज़राइल की सुरक्षा है, और अंततः, वह इम्मानुएल से, स्वयं मसीह से आता है।

"जल्दबाजी करो" या "शर्म करो" (सीएफ. रोम. 9:33)

आइए "जल्दबाजी" के लिए हिब्रू शब्द पर नजर डालें। यह तीसरा पुल्लिंग एकवचन है। इसका वास्तव में मतलब है "जल्दबाजी करना।" अब इसे इस अर्थ में समझा जा सकता है - जैसा कि एनआईवी कहता है: "जो भरोसा करता है वह कभी निराश नहीं होगा..." शायद देखें, शायद उस अनुवाद के पीछे क्या है... सेप्टुआजेंट का अनुवाद है कि "शर्मिंदा नहीं होना चाहिए," जो कि बहुत करीब है, आप देखिए, "कभी निराश नहीं होंगे।" सेप्टुआजेंट कहता है, "शर्मिंदा नहीं होऊंगा।" रोमियों 9:33 में इसे इसी तरह उद्धृत किया गया है - "शर्मिंदा नहीं होना पड़ेगा" - और फिर सवाल यह है कि आप "जल्दबाजी करने" से "लज्जित" कैसे हो जाते हैं? और शायद यह इस अर्थ में है: "जो विश्वास करता है उसे जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए" एक अर्थ में वह अधीर नहीं होगा, भले ही वादे के निष्पादन में

देरी हो रही हो। अधीर नहीं होंगे - यानी उस अर्थ में जल्दबाजी करेंगे - लेकिन वादे पर भरोसा रखें, भले ही उसके पूरा होने और क्रियान्वयन में देरी हो सकती है। मुझे लगता है कि "शर्मिंदा होना" इस विचार को और अधिक प्रमुख बनाता है कि एक आस्तिक की उम्मीदें निराश नहीं होंगी; वे लज्जित न होंगे, उनकी आशाएं निराश न होंगी। मुझे लगता है कि उन विचारों के बीच घनिष्ठ समानता है, लेकिन जोर कुछ अलग है... शायद [द] एनआईवी सेप्टुआजेंट अनुवाद से प्रभावित है, और न्यू टेस्टामेंट उद्धरण इस अर्थ में विचार के उस पहलू पर "जल्दी करो" पर जोर देता है। गेसेनियस का तर्क है कि अरबी मूल के आधार पर हिब्रू क्रिया का अर्थ न केवल "जल्दी करना" है, बल्कि "शर्मिंदा होना" भी है। यह एक और दिशा होगी, लेकिन मैं इसकी वैधता के बारे में इतना निश्चित नहीं हूं - शब्द के दोहरे प्रकार के अर्थ के लिए अरबी से अपील करना।

यशायाह 28:17 छिपने के स्थान में नदी बहती है

ठीक है, पद 17: "मैं न्याय की रेखा खींचूंगा, और धर्म का नाश करूंगा, और झूठ का आश्रय ओलों से बह जाएगा, और छिपने के स्थान में जल बह निकलेगा।" क्योंकि इज़राइल ने अपने भगवान पर भरोसा करने से इनकार कर दिया है - विश्वास करने और विश्वास करने के लिए भगवान के प्रावधान के माध्यम से उनकी सहायता और सुरक्षा प्राप्त करने से इनकार कर दिया है - क्योंकि वे इससे इनकार करते हैं, उन्हें इस कविता के फैसले को पूरा करना होगा, जहां यशायाह फिर से आने की तुलना करता है अश्शूरियों को एक बड़ी नदी की ओर ले जाओ जो भूमि को जलमग्न कर देगी। पानी छुपने की जगह से बह निकलेगा। यह वैसा ही है, जैसा आपको याद है, अध्याय आठ, श्लोक सात और आठ, जहां यशायाह ने कहा था, "नदी का पानी [हैं] मजबूत और पराक्रमी - यहाँ तक कि अश्शूर का राजा भी अपनी सारी महिमा में, वह नहरों पर चढ़कर उसके तटों को बहा देगा, यहूदा से होकर गुजरेगा, बह निकलेगा, पार हो जाएगा, यहाँ तक कि गर्दन तक फैल जाएगा।" उसी प्रकार का सुझाव यहां देखें, और निःसंदेह, ओलावृष्टि वही है जिसके बारे में उन्होंने सामरिया को

नष्ट करने की बात कही थी ताकि न्याय आएगा और छिपने के स्थान को नष्ट कर दिया जाएगा।

यशायाह 28:18-20 मृत्यु के साथ अनुबंध=अश्शूर, सुरक्षा के मानवीय स्रोतों की असंभवता

श्लोक 18: "और मृत्यु के साथ जो वाचा तुमने बाँधी थी" - अश्शूरियों के साथ तुम्हारी यह व्यवस्था है - "मृत्यु के साथ तुम्हारी वाचा टूट जाएगी; जब अधोलोक के साथ तेरी वाचा बान्धी हुई होगी, तब वह स्थिर न रहेगी, और तू उसके द्वारा रौंदा जाएगा। वह व्यवस्था बेकार साबित होगी क्योंकि असीरियन यहूदा के साथ-साथ उत्तरी साम्राज्य पर भी कब्ज़ा करने जा रहे हैं।

श्लोक 19 और 20: "जब से वह निकलेगा, तब से वह तुम्हें ले लेगा; क्योंकि वह भोर से भोर होता जाएगा, और दिन और रात ढलता जाएगा; रिपोर्ट को समझने में ही परेशानी होगी। क्योंकि बिछौना इतना छोटा है कि मनुष्य उस पर तान सकता है, और ओढ़ना इतना छोटा है कि वह उसमें अपने आप को लपेट सकता है।" एनआईवी का कहना है, "बिस्तर इतना छोटा है कि उसे फैलाया नहीं जा सकता, कंबल इतना संकीर्ण है कि उसे आपके चारों ओर लपेटा नहीं जा सकता।" यह ईश्वर के बिना मानव संसाधनों द्वारा सुरक्षा सुनिश्चित करने की असंभवता का एक उदाहरण है । नई बाइबिल टिप्पणी श्लोक 20 के बारे में कहती है - श्लोक 20 एक दिलचस्प श्लोक है - यह कहता है, "यह उन संसाधनों पर अंतिम शब्द है जो बुरी तरह विफल हो जाते हैं।" उन संसाधनों पर अंतिम शब्द जो बुरी तरह विफल हो जाते हैं। मुझे यकीन है कि आप सभी को ऐसे बिस्तर पर सोने की कोशिश करने का अनुभव हुआ होगा जो बहुत छोटा है या आपको ठंड लग रही है और आपके पास कंबल है जिसे आप अपने आसपास नहीं पा सकते हैं, और यह एक निराशाजनक तरह का अनुभव है। खैर, अश्शूरियों के साथ इज़राइल की व्यवस्था यही साबित होने वाली है।

आपके चारों ओर लपेटने के लिए बहुत संकीर्ण कंबल के बारे में क्या? इस सप्ताह मुझे मेरे बेटे का फोन आया; उन्होंने पिछले पूरे सप्ताह बिताया, जो कि उनका स्प्रिंग ब्रेक था - यह मेरा बेटा मार्क है जो नौसैनिक बच्चा है - वह पिछले सप्ताह सिएरा नेवादास का पता

लगाने के लिए गए थे और स्नो शूज़ के साथ 7-8,000 फीट की ऊंचाई पर योसेमाइट घाटी से बाहर निकले थे। पांच और छह फीट बर्फ. जब भी वे वहां थे, हर रात बर्फबारी होती थी, इसलिए वे लगभग जम जाते थे। यहाँ तक कि सब कुछ होने पर भी - उसके पास मौजूद सारे कपड़े - और फिर, उसके स्लीपिंग बैग में, जो कि एक अच्छा स्लीपिंग बैग है, वह अभी भी ठंडा था। हो सकता है कि उसे कुछ ऐसा अनुभव हुआ हो जो उसे महसूस हुआ हो। उन्होंने कहा कि आप अपना तंबू गाड़ देंगे, [और] सुबह आप लगभग 3 फीट नीचे होंगे। मुझे लगता है कि शरीर की गर्मी आपको पिघला देगी, बर्फ में डूब जाएगी। वह पद 20 था।

यशायाह 28:21-22 इस्राएल पर परमेश्वर का न्याय

पराजिम पर्वत के समान उदय होगा ; वह क्रोधित होगा, जैसा कि गिबोन की घाटी में हुआ था - ताकि वह अपना काम, अपना अजीब काम कर सके, और अपना काम, अपना अजीब काम पूरा कर सके। इसलिये अब ठट्ठा न करो, ऐसा न हो कि तुम्हारे हाथ दृढ़ हो जाएं; क्योंकि मैं ने सेनाओं के परमेश्वर यहोवा से सुना है, कि सारी पृथ्वी पर विनाश निश्चित है। "पृथ्वी" हिब्रू शब्द *इरेत्ज़ है* जिसे मैं संभवतः "भूमि, देश" कहूंगा। मुझे नहीं लगता कि यह उस बिंदु पर वैश्विक है... लेकिन 21 और 22... 21 में आपको डेविड के तहत पलिश्तियों के वध का संकेत मिलता है। "यहोवा पेरज़ीम पर्वत की नाईं ऊपर उठेगा ।" 1 इतिहास 14:11 और 16 में दाऊद द्वारा यहोवा की शक्ति से पलिश्तियों के वध की बात कही गई है। और फिर कनानी गठबंधन पर यहोशू की जीत - "वह गिबोन की घाटी की तरह क्रोधित होगा।" यहोशू अध्याय दस में है - यहीं पर आपको यहोशू की सूर्य के स्थिर रहने और उस विजय के लिए प्रार्थना मिली जो प्रभु ने कनानियों पर दी थी। लेकिन ध्यान दें कि पद 20 में यह कैसे काम करता है: "यहोवा पेराज़िम पर्वत की नाईं उठेगा ; वह गिबोन की तराई की नाईं क्रोधित होगा; परन्तु इसलिये कि वह अपना काम, अपना अनोखा काम करे।" अब, परमेश्वर का न्याय पलिश्तियों या कनानियों पर नहीं है। यह इज़राइल पर है; यह यहूदा पर है; तो यह उसका अजीब काम है - उसका फैसला अपने ही लोगों पर आ गया है। यह वह नहीं है जिसकी इस्राएली अपेक्षा करेंगे - कि उसका न्याय उन पर आये। इसलिए वह कहता

है, उपहास करना बंद करो, अन्यथा दण्ड और भी बुरा होगा, क्योंकि यहोवा ने सारे देश का न्याय करने का निश्चय किया है।

मुझे लगता है कि श्लोक 22 में एनआईवी का बेहतर अनुवाद है: "अपना मजाक उड़ाना बंद करो नहीं तो तुम्हारी जंजीरें भारी हो जाएंगी। यहोवा, सर्वशक्तिमान यहोवा ने मुझे सारी भूमि के विनाश की आज्ञा दी है।"

यशायाह 28:23-29 भगवान एक किसान की तरह योजना बनाते हैं   और फिर हम अध्याय के अंत में आते हैं, छंद 23 से 29, जो आलंकारिक भाषा में एक अलग इकाई है और यह समझना थोड़ा मुश्किल है कि यह पूर्ववर्ती बातों के साथ कैसे फिट बैठता है अध्याय। मैं कुछ सुझाव दूंगा, लेकिन पहले मुझे इसे पढ़ने दीजिए। मैं इसे एनआईवी से पढ़ूंगा: "सुनो और मेरी आवाज सुनो; ध्यान दो और मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। जब कोई किसान रोपण के लिए हल चलाता है, तो क्या वह लगातार हल चलाता है? क्या वह टूटता रहता है - टूटता रहता है और मिट्टी को नुकसान पहुँचाता रहता है? जब वह सतह को समतल कर लेता है, तो क्या वह जीरा नहीं बोता और जीरा नहीं बिखेरता ? क्या वह अपने स्थान में गेहूँ, अपने खेत में जौ, और अपने खेत में जौ नहीं बोता? उसका परमेश्वर उसे निर्देश देता है और उसे सही मार्ग सिखाता है। न तो जीरे को स्लेज से कूटा जाता है और न ही जीरे के ऊपर गाड़ी का पहिया घुमाया जाता है । जीरे को छड़ी से और जीरे को डंडे से पीटा जाता है। रोटी बनाने के लिए अनाज को पीसना ज़रूरी है, ताकि कोई उसे हमेशा के लिए कूटता न रहे। यद्यपि वह उस पर खलिहान की गाड़ी के पहिए चलाता है, परन्तु उसके घोड़े उसे नहीं पीसते। यह सब भी सर्वशक्तिमान यहोवा की ओर से आता है, वह अद्‌भुत युक्ति वाला और अद्‌भुत बुद्धिवाला है।"

मुझे 23 और 26 में लगता है - पहला खंड - कि विचार यह है कि ईश्वर कोई काम करने वाला नहीं है जो चीजों को बेतरतीब ढंग से करता है। और , बेशक, वह यहां उस सादृश्य का उपयोग कर रहा है जिस तरह से एक किसान अपना काम करता है, लेकिन भगवान कोई काम करने वाला नहीं है जो काम को बेतरतीब ढंग से करता है। उसके पास

योजनाएँ होती हैं जिन्हें सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है और वह उन्हें उस सामग्री के अनुरूप कार्यान्वित करता है जिसके साथ वह काम कर रहा है। उसके पास सावधानीपूर्वक योजनाएँ हैं; जिस सामग्री के साथ वह काम कर रहा है, उसके अनुरूप वह उन पर काम करता है। इसलिए हल चलाने वाला हमेशा के लिए हल नहीं जोतता। जब कोई किसान रोपण के लिए हल चलाता है, तो क्या वह लगातार हल चलाता है? नहीं, वह हमेशा के लिए हल नहीं जोतता। जुताई करने के बाद, वह बीज बोता है। इसलिए जब परमेश्वर अपने लोगों के साथ व्यवहार के इस वर्तमान चरण को समाप्त कर लेगा, तो वह अगला चरण शुरू करेगा। वह हमेशा के लिए हल नहीं जोतने वाला है; वह भी लगाएगा. वह हमेशा के लिए पौधे नहीं लगाएगा, लेकिन वह सही समय पर फसल भी काटेगा। तो मुझे ऐसा लगता है कि यहां भगवान का अपने लोगों के साथ व्यवहार और एक किसान जिस तरह से अपने खेती के काम के विभिन्न चरणों से निपटता है, के बीच एक समानता है। परमेश्वर ने यहूदा की रक्षा की है, लेकिन उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि वह ऐसा हमेशा के लिए करेगा यदि वे अविश्वास और अवज्ञा में बने रहेंगे, तो वह न्याय लाएगा। जब वह न्याय करेगा, वह भी सदैव के लिये नहीं रहेगा। प्रभु अगले चरण पर आगे बढ़ेंगे। लेकिन किसान की पद्धति भगवान द्वारा अपने लोगों के साथ व्यवहार करने का एक दृष्टांत प्रतीत होती है।

लेकिन फिर जब आप छंद 27 से 29 तक पहुंचते हैं - विशेष रूप से 27 और 28 - तो किसान विभिन्न प्रकार के उत्पादों के साथ अलग-अलग व्यवहार करता है। जीरे को स्लेज से नहीं दौड़ाया जाता, न जीरे के ऊपर गाड़ी का पहिया चलाया जाता है । जीरे को छड़ी से पीटा जाता है, जीरे को छड़ी से, इत्यादि। किसान विभिन्न प्रकार के उत्पादों के साथ अलग-अलग तरीके से व्यवहार करता है, इसलिए भगवान अपनी वाचा से बाहर के लोगों के साथ उन लोगों की तुलना में अलग तरीके से व्यवहार करता है जो उसके लोग हैं। और इस संदर्भ में, मुझे लगता है कि उस संबंध में एक बात जो स्पष्ट हो जाती है वह यह है कि वह अपने लोगों को दंडित करेगा, वह उन्हें दंडित करेगा, वह उनका न्याय करेगा, लेकिन अंततः उन्हें नष्ट नहीं करेगा। वह अपने लोगों को ताड़ना देगा, लेकिन अंतिम विनाश नहीं।

मुझे लगता है कि इस दृष्टान्त में उससे कहीं अधिक है, लेकिन मुझे लगता है कि हाँ,

मुझे लगता है कि इसमें वह भी शामिल है। मुझे नहीं लगता कि यह केवल विशिष्ट रूप से है, बल्कि यह कि ईश्वर अपने लोगों से अलग-अलग समय और अलग-अलग तरीकों से निपटने के लिए विभिन्न चरणों से गुजरेगा और इस बिंदु पर, उनकी अवज्ञा के कारण , वह निर्णय लाता है।

सन्दर्भ से अधिक - छंद 27-28 के चित्र में जो सिद्धांत दिखाई देता है वह यह है कि किसान द्वारा विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का अलग-अलग तरीकों से व्यवहार किया जाता है। अब, इस सन्दर्भ में आपके पास असीरिया के बारे में कथन हैं, कि जंगल फिर कभी न उगने के लिए काटे जा रहे हैं। फिर भी इज़राइल का न्याय किया जाएगा और ऐसा होगा, इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि यह उस सिद्धांत का एक संभावित अनुप्रयोग है - जिस तरह से भगवान इज़राइल से निपटते हैं। यह कठिन है, यह खंड।

यशायाह 29:1 एरियल

ठीक है, चलिए अध्याय 29 पर चलते हैं। यह शुरू होता है, "तुम्हारे लिए शोक, एरियल, एरियल, वह शहर जहां डेविड बसे थे।" ऐसा प्रतीत होता है कि एरियल स्पष्ट रूप से सिय्योन, या जेरूसलम के लिए प्रयुक्त नाम है। "तुम्हारे लिए शोक, एरियल, वह शहर जहां डेविड बसे थे।" प्रश्न यह है कि इस शब्द का क्या अर्थ है? कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह हिब्रू मूल *एरियल,* शेर से आया है, और इसलिए आपके पास "भगवान का शेर" है। लेकिन फिर एक अरबी मूल है जो बताता है कि एरियल का अर्थ "चूल्हा" या "चिमनी" है। ऐसे संदर्भ में जो कहीं अधिक उपयुक्त लगता है, ईश्वर का चूल्हा या अग्निस्थान, लेकिन वह अरबी सादृश्य से आता है। आप देख सकते हैं, यदि आप आगे पढ़ते हैं, "तुम्हें धिक्कार है, एरियल, एरियल, वह शहर जहां डेविड बसे थे। जोड़ना वर्ष दर वर्ष; अपने त्योहारों के चक्र को चलने दें। तौभी मैं अरीएल को घेरूंगा; वह विलाप करेगी और विलाप करेगी, वह मेरे लिये वेदी के चूल्हे के समान होगी।" वहां एनआईवी का कहना है कि "वेदी चूल्हा" के लिए हिब्रू भाषा एरियल के लिए हिब्रू की तरह लगती है। तो एरियल को परेशानी और कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

फिर भी यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो चिरस्थायी या पूरी तरह से नष्ट होने वाली हो। आप श्लोक तीन में पढ़ते हैं, "मैं तेरे विरुद्ध चारों ओर पड़ाव डालूँगा; मैं तुझे गुम्मटों से घेरूंगा, और तेरे विरूद्ध घेरा डालूंगा। नीचे लाकर तू भूमि पर से बोलेगा; तेरी वाणी धूल में से बुदबुदाने लगेगी। तेरी आवाज़ भूत की तरह धरती से आएगी; तुम्हारी धूल में से तुम्हारी वाणी फुसफुसायेगी।" तो पहले चार छंदों में आप शहर को घेरे में, ज़मीन पर कुचला हुआ, न्याय के तहत पीड़ित पाते हैं। लेकिन फिर श्लोक पाँच से आठ में स्थिति उलट जाती है । पाँच-आठ कहते हैं, "परन्तु तेरे शत्रु बारीक धूल के समान हो जाएंगे, और क्रूर भीड़ उड़ी हुई भूसी के समान हो जाएगी। अचानक, एक पल में, सर्वशक्तिमान यहोवा गड़गड़ाहट और भूकंप और बड़े शोर के साथ, आंधियों, तूफानों और भस्म करने वाली आग की लपटों के साथ आएगा। तब सभी राष्ट्रों का समूह जो एरियल के विरुद्ध लड़ता है, जो उसके गढ़ में उस पर आक्रमण करता है और उसे घेर लेता है, वे रात में एक सपने के साथ होंगे - जैसा कि एक भूखा आदमी सपने में देखता है कि वह खा रहा है, लेकिन वह जागता है, और उसकी भूख बनी रहती है; जैसे कोई प्यासा स्वप्न में देखता है कि मैं पी रहा हूं, परन्तु जाग उठता है और प्यास बुझती नहीं। सिय्योन पर्वत के विरुद्ध लड़ने वाले सभी राष्ट्रों की भीड़ के साथ भी ऐसा ही होगा।" तो श्लोक पाँच से आठ में, भले ही यहूदा खुद को बचाने में असहाय है - और मुझे लगता है कि यहाँ संदर्भ अभी भी असीरियन आक्रमणकारियों का है, भले ही यह राष्ट्रों और सभी राष्ट्रों की भीड़ के साथ बहुवचन है... मुझे ऐसा लगता है, संदर्भ में, हम अभी भी यहूदा के विरुद्ध असीरियन आक्रमण के बारे में बात कर रहे हैं।

प्रभु यहूदा की रक्षा करेंगे कुछ संदर्भ जो संकेत देते हैं कि अन्य राष्ट्र भी यहूदा के विरुद्ध अश्शूरियों की बढ़त में शामिल हो गए, लेकिन मुझे ऐसा नहीं दिख रहा है। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि दृश्य यही है। लेकिन भले ही वे उस हमले के सामने असहाय हैं, भगवान यहूदा की रक्षा करेंगे। आप ध्यान दें कि वह कहता है, "अचानक, एक पल में, प्रभु आएंगे," और पद पांच कहता है, "तुम्हारे शत्रु बारीक धूल की तरह हो जाएंगे, क्रूर भीड़ उड़ी हुई भूसी की तरह हो जाएगी।" इसलिए, जब आप श्लोक सात और आठ पर आते हैं, तो यह

असीरियन राजा को एक भूखे आदमी की तरह प्रतीत होगा जो सो रहा है, कुछ बढ़िया भोजन का सपना देख रहा है, और वह जागता है और पाता है कि उसके पास कुछ भी नहीं है। अश्शूर सोचता है, *देखो, हमें यहूदा मिल गया है, हमें यरूशलेम मिल गया है*, लेकिन यहोवा हस्तक्षेप करता है और अश्शूरियों को हिजकिय्याह के समय में पीछे हटने के लिए मजबूर किया जाता है जैसा कि हम यशायाह की पुस्तक में बाद में पढ़ते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि आप यशायाह अध्याय 37 में इसकी शाब्दिक पूर्ति पाते हैं, हिजकिय्याह के समय के दौरान जब सन्हेरीब यहूदा के खिलाफ आता है, यरूशलेम को लेने की कसम खाता है लेकिन फिर पीछे हटने के लिए मजबूर हो जाता है।

यशायाह 29:9-12 प्रभु और उसके वचन से विमुख हो गए

ठीक है, पद 9 से 12: "स्तब्ध और चकित हो जाओ, अन्धे हो जाओ और दृष्टिहीन हो जाओ; नशे में रहो, लेकिन शराब से नहीं, लड़खड़ाओ, लेकिन बीयर से नहीं। यहोवा ने तुम्हें गहरी नींद दे दी है; उसने तुम्हारी (भविष्यद्वक्ताओं की) आँखों पर मुहर लगा दी है; उसने तुम्हारे सिरों (दर्शकों) को ढाँक दिया है। आपके लिए यह संपूर्ण दर्शन एक पुस्तक में बंद शब्दों के अलावा और कुछ नहीं है। और यदि तू पुस्तक किसी ऐसे व्यक्ति को दे जो पढ़ सके, और उससे कहे, 'कृपया इसे पढ़ो,' तो वह उत्तर देगा, 'मैं नहीं पढ़ सकता; इसे सील कर दिया गया है।' या यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति को स्क्रॉल देते हैं जो पढ़ नहीं सकता है, और कहता है, 'कृपया इसे पढ़ें,' तो वह उत्तर देगा, 'मैं पढ़ना नहीं जानता।" 9 से 12 - मुझे लगता है कि आपके पास जो है वह है भूमि के नेताओं, रईसों की निरंतर निंदा। वे दाखमधु से मतवाले हैं; जैसा कि हम अध्याय 28, श्लोक 7 में पढ़ते हैं, उन्होंने दाखमधु, और मादक पेय के कारण भी पाप किया है; वे रास्ते से हट गए हैं - इसलिए वे शराब के नशे में धुत हो गए हैं, लेकिन वह यहां श्लोक नौ में इसके अलावा बताते हैं, कि वे नशे में हैं लेकिन शराब के नशे में नहीं हैं। "स्तब्ध और चकित हो जाओ, अन्धे हो जाओ, दृष्टिहीन हो जाओ; नशे में रहो, परन्तु शराब से नहीं; लड़खड़ाओगे, लेकिन बीयर से नहीं।

अब वह जिस बात का उल्लेख कर रहा है वह यह है कि वे परमेश्वर से विमुख हो गए

हैं। उनके सामने एक किताब है और वे उसे आसानी से पढ़ सकते हैं, लेकिन वे ऐसा करने से इनकार कर देते हैं। उनके पास यह पुस्तक है जो मुझे लगता है कि भगवान के वचन को संदर्भित करती है, और वे इसे पढ़ सकते हैं, लेकिन "यदि आप पुस्तक को किसी ऐसे व्यक्ति को देते हैं जो पढ़ सकता है और उससे कहता है, 'इसे पढ़ो,' तो वह कहता है, 'मैं नहीं कर सकता, यह है सीलबंद.' और यदि आप इसे किसी ऐसे व्यक्ति को देते हैं जो पढ़ नहीं सकता और कहता है, 'इसे पढ़ो,' तो वह उत्तर देता है, 'मुझे पढ़ना नहीं आता।" उनके पास बहाने हैं। जो व्यक्ति पढ़ने में सक्षम है वह इसे पढ़ने के लिए सील तोड़ने की जहमत नहीं उठाता। जो पढ़ने में सक्षम नहीं है, वह इसे किसी ऐसे व्यक्ति के पास ले जाने की जहमत नहीं उठाता जो इसे पढ़ सके, उसे यह पढ़कर सुनाए। उन्हें पढ़ने में कोई रुचि नहीं है; उन्हें प्रभु के वचन में कोई दिलचस्पी नहीं है, इसलिए वे गहरी नींद में हैं - वे नशे में हैं, लेकिन शराब से नहीं; वे यहोवा से विमुख हो गए हैं और उन्हें यहोवा में कोई रुचि नहीं रही। तो मुझे ऐसा लगता है कि श्लोक 12 के अंत तक यही स्थिति है।

यशायाह 29:13-24 इस्राएल ने अश्शूर के साथ षडयंत्र रचा, उन्होंने चित्रित किया कि वे कुम्हार हैं

श्लोक 13 से 24: एक बहुत ही रोचक मार्ग, जिसकी व्याख्या करना बहुत कठिन है। मैं एक सुझाव देने जा रहा हूँ. आप इसके बारे में सोच सकते हैं. मुझे ऐसा लगता है कि 13 से 24 में जो शामिल है वह ईश्वर के बारे में एक दीर्घकालिक विहंगम दृष्टि है - भविष्य में अपने लोगों के लिए ईश्वर के कार्यक्रम का जो वर्तमान स्थिति - आहाज और हिजकिय्याह के समय से कहीं आगे बढ़ता है। आइए इसे पढ़ें, और फिर मैं इस पर कुछ टिप्पणियाँ करूँगा। तेरह: "यहोवा यों कहता है, ये लोग मुंह से तो मेरे समीप आते हैं, और होठों से तो मेरा आदर करते हैं, परन्तु उनका मन मुझ से दूर रहता है। उनकी मेरी पूजा केवल मनुष्यों द्वारा सिखाए गए नियमों से बनी है। इसलिये, मैं एक बार फिर इन लोगों को आश्चर्य पर आश्चर्य से चकित कर दूंगा; बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी, बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी। धिक्कार है उन

पर जो अपनी योजनाओं को यहोवा से छिपाने के लिये बहुत गहराई तक जाते हैं, जो अपना काम अन्धकार में करते हैं और सोचते हैं, 'हमें कौन देखता है? कौन जानेगा?' तुमने चीज़ों को उल्टा कर दिया है, मानो कुम्हार को मिट्टी के समान समझा गया हो। क्या जो रचा गया है, वह अपने रचने वाले से कहे, 'उसने मुझे नहीं बनाया'? क्या घड़ा कुम्हार के बारे में कह सकता है, 'वह कुछ नहीं जानता?' क्या बहुत ही कम समय में लेबनान एक उपजाऊ खेत में नहीं बदल जाएगा और उपजाऊ खेत जंगल जैसा नहीं लगने लगेगा? उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनेंगे, और अन्धे अन्धकार में से अन्धे आंखें देखने लगेंगे। दीन लोग एक बार फिर यहोवा के कारण आनन्दित होंगे; जरूरतमंद इस्राएल के पवित्र के कारण आनन्द मनाएँगे। निर्दयी नष्ट हो जाएँगे, ठट्ठा करनेवाले नष्ट हो जाएँगे, और जो बुराई पर दृष्टि रखते हैं वे सब काट दिए जाएँगे - जो वचन से किसी को दोषी ठहराते हैं, जो बचाव करनेवाले को अदालत में फँसाते हैं और झूठी गवाही से निर्दोष को लूट लेते हैं। न्याय। इस कारण यहोवा, जिस ने इब्राहीम को छुड़ाया, याकूब के घराने से यों कहता है, याकूब फिर लज्जित न होगा; अब उनके चेहरे पीले न पड़ेंगे। जब वे अपके बीच में मेरे हाथ की बनाई हुई अपक्की सन्तान को देखेंगे, तब मेरा नाम पवित्र रखेंगे; वे याकूब के पवित्र की पवित्रता को मानेंगे, और इस्राएल के परमेश्वर का भय मानेंगे। जो मन में पथभ्रष्ट हैं वे समझ प्राप्त करेंगे; जो शिकायत करते हैं वे निर्देश स्वीकार करेंगे।" अब, मुझे लगता है कि आप यहां जो देख रहे हैं वह यह है कि प्रभु घोषणा करते हैं कि वह अपने लोगों के बीच एक अद्भुत काम करने जा रहे हैं।

अब, यदि आप किंग जेम्स, श्लोक 14 में पढ़ते हैं, तो आप पढ़ते हैं, "इसलिए, देखो, मैं इस लोगों के बीच एक अद्भुत काम करने के लिए आगे बढ़ूंगा, यहां तक कि एक अद्भुत काम और एक आश्चर्य भी। परन्तु उनके बुद्धिमानोंकी बुद्धि नष्ट हो जाएगी। वहां का एनआईवी कहता है, "मैं इन लोगों को आश्चर्य पर आश्चर्य से चकित कर दूंगा।" लेकिन कुछ आश्चर्यजनक घटित होने वाला है, एक अद्भुत कार्य। वह बुद्धिमानों की बुद्धि को नाश करनेवाला है; बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी, बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट हो जाएगी।" वह श्लोक 14 है।

मुझे लगता है कि श्लोक 15 दुष्ट शक्तियों के साथ गठबंधन द्वारा भूमि को वितरित करने की तात्कालिक स्थिति में इस योजना का फिर से संकेत है। पंद्रह कहता है, "हाय उन पर जो अपनी योजनाओं को यहोवा से छिपाने के लिये बहुत गहराई तक जाते हैं, जो अपना काम अन्धकार में करते हैं और सोचते हैं, 'यह कौन देखता है? कौन जानेगा?" *हम अश्शूरियों के साथ यह व्यवस्था करेंगे, हम वहां अपनी सुरक्षा पाएंगे; यह गुप्त रूप से किया गया है - किसे पता चलेगा?* लेकिन फिर श्लोक 16 और 17: इस्राएल ऐसा व्यवहार कर रहा है मानो वे स्वयं मिट्टी हों और यहोवा कुम्हार न हो। यह चीजों को उल्टा कर देता है। देखो, तुम चीजों को उलट-पुलट कर देते हो; कुम्हार को मिट्टी के समान माना जाता था, "क्या जो बनता है वह अपने बनाने वाले से कहेगा, 'उसने मुझे नहीं बनाया?'" वे मिट्टी और भगवान होने के बजाय ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे वे कुम्हार हैं कुम्हार, और भगवान इस महान उलटफेर को करके - वर्तमान परिस्थितियों को उलट कर यह दिखाने जा रहे हैं कि वह कुम्हार है और वे मिट्टी हैं।

यशायाह 29:17 लेबनान एक उपजाऊ क्षेत्र में बदल गया [इज़राइल नहीं] और मुझे ऐसा लगता है कि इस पूरे परिच्छेद में मुख्य कथन की पृष्ठभूमि यही है, जो श्लोक 17 में एक आलंकारिक है। और जिस तरह से आप व्याख्या करते हैं 17 होने जा रहा है - यह निर्धारित करें कि आप इस अनुच्छेद के बाकी हिस्सों की व्याख्या कैसे करते हैं। आप देखिए, 17 कहता है, "क्या थोड़े ही समय में लेबनान एक उपजाऊ खेत में नहीं बदल जाएगा और उपजाऊ खेत जंगल जैसा नहीं लगने लगेगा?" अब मुझे ऐसा लगता है कि जो कहा जा रहा है वह यह है कि इजराइल उपजाऊ क्षेत्र रहा है, फलदायी क्षेत्र रहा है। इस्राएल वह दाख की बारी है जिसे यहोवा ने उपजाया है। उन्होंने कहा, उन्होंने अपनी देखभाल और प्यार खूब लुटाया है अंगूर के बाग के बारे में, इसे संरक्षित किया। अन्यजाति इस्राएल की वाचा के बाहर लेबनान के जंगलों के समान हैं। और अब वह श्लोक 14 का यह अद्भुत कार्य करने जा रहा है--अद्भुत कार्य। और वो क्या है? लबानोन उपजाऊ खेत में बदला जाएगा, और उपजाऊ खेत जंगल के समान प्रतिष्ठित किया जाएगा। तो मुझे ऐसा लगता है कि पद 17 जो

कह रहा है वह यह है कि इस्राएल के लोगों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाना चाहिए जैसे कि वे भगवान की वाचा से बाहर थे, जबकि जो लोग पहले वाचा के बाहर थे उन्हें भगवान के लोगों के बीच एक स्थिति में लाया जाना है। "क्या थोड़े ही समय में लेबनान एक उपजाऊ खेत में बदल नहीं जाएगा, [और] उपजाऊ खेत जंगल जैसा नहीं लगने लगेगा?"

यशायाह 29:18 वाचा से बाहर के लोगों को अब लाया गया, हालाँकि इसे श्लोक 18 में और विकसित किया गया है - कम से कम यदि आप चित्र की उस समझ को स्वीकार करते हैं। मुझे लगता है कि जब आप किसी आंकड़े पर आते हैं और वह आंकड़ा क्या दर्शाता है, तो हमेशा कुछ हद तक अनिश्चितता होती है, और वह आंकड़ा क्या दर्शाता है, इसके बारे में अन्य सुझाव भी आए हैं। लेकिन अगर आप इसे उस तरह से देखें, तो यह विचार है श्लोक 18 में आगे कहा गया है: "उस समय बहरे पुस्तक की बातें सुनेंगे, [और] अन्धे और अन्धकार में से अन्धे आंखें देखेंगे।" आप पहले अध्याय में श्लोक 11 और 12 में देखें, हमें बताया गया है कि जिन लोगों के पास ईश्वर का कानून है और वे इसे पढ़ने में सक्षम हैं - वे ऐसा करने से इनकार करते हैं। भगवान के अपने लोग: वे सभी प्रकार के बहाने देते हैं - उन्हें प्रभु के वचन को सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है, और यहां श्लोक 18 में आपने पढ़ा है कि जो बहरे हैं उन्हें अब सुनने का विशेषाधिकार दिया जाना है। "उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनेंगे, और अन्धों को दृष्टि दी जाएगी। अन्धे की आंखें अन्धकार और अन्धकार में से देख सकेंगी।" इसलिए जो अन्यजाति परमेश्वर की वाचा से बाहर हैं, उन्हें अंदर लाया जाएगा, उनकी आंखें खोली जाएंगी, उनके कान खोले जाएंगे, और परमेश्वर के लोगों के बीच उनका स्थान लिया जाएगा।

मुझे ऐसा लगता है कि यहाँ का चित्र रोमन 11 में जैतून के पेड़ के चित्र के समान ही चित्रित कर रहा है, जिसमें कुछ शाखाएँ टूट गई थीं और उनके स्थान पर ये जंगली शाखाएँ लगा दी गई थीं। मुझे लगता है कि यहां जो कहा जा रहा है और जो हमने यशायाह अध्याय सात में पाया है, उसके बीच आप यहां भी कुछ हद तक समानता देख सकते हैं । उस सिरो-एफ़्रैमिक बात और राजा आहाज को यशायाह के संदेश को याद करें: यशायाह सात में,

भगवान ने आहाज को डांटा और कहा कि भगवान के अपने समय में, वह अहाज, अयोग्य राजा के स्थान पर दाऊद के सिंहासन पर एक योग्य व्यक्ति को बिठाने जा रहा है- -इमैनुएल के साथ. और यहाँ अध्याय 29 में, वह देश के दुष्ट नेताओं, रईसों को, परमेश्वर के वचन के प्रति उनकी उदासीनता, उनकी रुचि की कमी, उनके बहानों के लिए डांट रहा है, और वह वास्तव में कह रहा है, तुम्हें उन लोगों से *प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए जिन्हें तुम मानते हो भगवान के लोगों के दायरे से बाहर रहें*. उस समय बहिरे पुस्तक की बातें सुनेंगे, और अन्धे अन्धेरे में से आंखे देखने लगेंगे।

यशायाह 29:19-22

श्लोक 22—ठीक है—मैंने इस पर कोई टिप्पणी नहीं की… मुझे 19 से 21 तक जाने दीजिए; हम उस पर वापस आ सकते हैं, परन्तु 19: "दीन लोग एक बार फिर यहोवा के कारण आनन्दित होंगे; जरूरतमंद इस्राएल के पवित्र के कारण आनन्द मनाएँगे। निर्दयी नष्ट हो जाएँगे, ठट्ठा करनेवाले मिट जाएँगे, और जो बुराई पर दृष्टि रखते हैं वे सब काट दिए जाएँगे - जो वचन से किसी को दोषी ठहराते हैं, जो बचाव करनेवाले को अदालत में फँसाते हैं और झूठी गवाही से निर्दोष को न्याय से वंचित कर देते हैं ।"

यशायाह 29:22-23 फिर आप श्लोक 22 से 23 तक पहुँचते हैं। आप वहाँ पढ़ते हैं, "इसलिए, यहोवा, जिसने इब्राहीम को छुड़ाया, याकूब के घराने से यों कहता है: अब याकूब लज्जित न होगा, और न उनका लज्जित होना। चेहरे पीले पड़ जाते हैं. जब वे अपने बच्चों के बीच मेरे हाथों का काम देखेंगे, तो वे मेरा नाम पवित्र रखेंगे; वे याकूब के पवित्र की पवित्रता को स्वीकार करेंगे।" आप उम्मीद कर सकते हैं कि जैकब अपने बच्चों की हालत पर दुखी होगा, लेकिन हमने जो पढ़ा है वह यह है: वह खुश होगा। और श्लोक 23 कहता है क्यों: वह अपने बच्चों को देखेगा। देख, याकूब को फिर लज्जित न होना पड़ेगा। "जब वे अपने बीच अपने बच्चों को देखते हैं, तो वे मेरे हाथों का काम देखते हैं । " जैकब अपने बच्चों को, भगवान के हाथों के काम को देखेगा। मुझे लगता है कि जो कहा जा रहा है वह यह है कि

सच्चा इज़राइल उन लोगों को शामिल करने से बढ़ेगा जो जरूरी नहीं कि शरीर के अनुसार याकूब के बीज हों। परन्तु वे वे हैं जिन्हें परमेश्वर की शक्ति से छुटकारा दिलाया गया है और वे परमेश्वर के हाथों का काम हैं। तो तुम पढ़ो, "इसलिये यहोवा, जिस ने इब्राहीम को छुड़ाया, याकूब के घराने से यों कहता है, याकूब फिर लज्जित न होगा, जब वे अपने बीच अपने बच्चों को, मेरे हाथ का काम, देखेंगे, तो मेरा नाम रखेंगे पवित्र; वे याकूब के पवित्र की पवित्रता को मानेंगे, वे इस्राएल के परमेश्वर का भय मानेंगे।"

यशायाह 29:24 अन्यजातियों का परमेश्वर की ओर फिरना

श्लोक 24 - निष्कर्ष - शायद और भी दूर के भविष्य की ओर देखता है। क्योंकि वहाँ तुम पढ़ते हो, "जो मन के पथभ्रष्ट हैं वे समझ प्राप्त करेंगे; जो शिकायत करेंगे वे निर्देश स्वीकार करेंगे।" जो बुद्धिमान परमेश्वर से विमुख हो गए और मूर्ख बन गए और त्याग दिए गए, वे भी अंततः इसे समझ जाएंगे। तो जो लोग आत्मा में ग़लत थे या आत्मा में पथभ्रष्ट थे वे भी अंततः इसे समझ जायेंगे। मुझे लगता है कि शायद आपके पास रोमियों 11 में जैतून के पेड़ की आकृति के साथ पॉल द्वारा कही गई बात के समान समानता है कि प्राकृतिक शाखाएं, जो कुछ समय के लिए टूट गई थीं, उन्हें फिर से वापस लाया जाएगा और उनके अपने जैतून के पेड़ में फिर से लगाया जाएगा। जो लोग आत्मा में पथभ्रष्ट हैं वे समझ प्राप्त करेंगे। जो लोग शिकायत करेंगे वे निर्देश स्वीकार करेंगे। अब यदि यह समझने का वैध तरीका है कि इस अध्याय में क्या हो रहा है, तो आप श्लोक 14 से - श्लोक 13 से आगे - श्लोक 13 से अंत तक, आपको अपने लोगों के साथ भगवान के भविष्य के व्यवहार के बारे में इस प्रकार का विहंगम दृश्य मिलता है। जैसे कि ईश्वर यहूदियों से अन्यजातियों में बदल जाता है और अंततः यहूदियों को ही उस जैतून के पेड़ में वापस लाता है। अब, जैसा कि मैंने बताया, इसकी कुंजी पद 17 है: आप उस आकृति के साथ क्या करते हैं जो इस पूरे अनुच्छेद के केंद्र में है? क्या लबानोन उपजाऊ खेत में बदल गया, और उपजाऊ खेत जंगल के समान हो गया? और जिस तरह से आप इसे समझते हैं वह शेष अनुच्छेद की बारीकियों को समझने के तरीके को प्रभावित करने वाला है।

यशायाह 29:19-21 जैसे-जैसे सुसमाचार फैलता है, बुराई का प्रभाव कमज़ोर होता जाता है

श्लोक 19 और 21 कठिन हैं। मुझे लगता है कि आप इसे इस अर्थ में समझ सकते हैं कि जैसे-जैसे सुसमाचार फैलता है, जैसे-जैसे सुसमाचार इज़राइल से अन्यजातियों तक जाता है और दुनिया के देशों में फैलता है, दुष्ट प्रभाव कमजोर हो जाएगा। बुरे प्रभाव का कमजोर होना - उन्मूलन नहीं, बल्कि उसका कमजोर होना।

उस समय ऐसा लग सकता है, हाँ, हाँ... लेकिन आप श्लोक 19 में देखते हैं कि नम्र लोग प्रभु में अपना आनंद बढ़ाएंगे, मनुष्यों में गरीब इस्राएल के पवित्र में आनन्द मनाएंगे - निश्चित रूप से आप इसे इस संदर्भ में समझ सकते हैं सुसमाचार का अनुभव.

यशायाह 29:20-21

श्लोक 20 और 21: भयानक व्यक्ति को नष्ट कर दिया जाता है, ठट्ठा करने वाला नष्ट हो जाता है, जो अधर्म पर नजर रखते हैं वे सभी काट दिए जाते हैं, जो एक शब्द के लिए एक आदमी को अपराधी बनाते हैं, जो फाटक में उलाहना देता है उसके लिए जाल बिछाते हैं, अलग हो जाओ बस कुछ नहीं के लिए. उस प्रकार का व्यवहार जो पूरी तरह से अन्यायपूर्ण है - उस प्रकार की चीज़ सुसमाचार के प्रसार से उस प्रभाव के माध्यम से कमजोर हो गई है जो सुसमाचार का मनुष्य के जीवन जीने के तरीकों पर पड़ता है। ठीक है, फिर से आप देखते हैं, मुझे लगता है कि यह इस पर निर्भर करता है कि आप श्लोक 17 के साथ क्या करते हैं। मैं आपको जो मैंने यहां सुझाया है उससे बिल्कुल अलग विचार देता हूं: जे बार्टन पायने 17 को बिल्कुल अलग तरीके से मानते हैं, और फिर वह अन्य छंदों को भी अलग तरह से मानते हैं। और इसे असीरियन स्थिति के संदर्भ में रखता है; पायने सुझाव देता है जब यह कहता है, "थोड़े समय में लेबनान एक उपजाऊ क्षेत्र में बदल जाएगा," वह इसे लेबनान के कमजोरी के स्तर तक कम होने के प्रतीक के रूप में देखता है; देखिए वह फलदार खेत को कमजोरी के प्रतीक के रूप में लेता है: लेबनान कमजोरी के स्तर तक कम हो जाएगा, जबकि इज़राइल अधिक शक्तिशाली हो जाएगा। फलदार खेत जंगल के समान

प्रतीत होंगे, जंगल शक्ति का प्रतीक है। तो वह - मुझे लगता है कि आपके उद्धरणों में उनमें से कुछ थे... पृष्ठ 22, अंतिम पैराग्राफ देखें। पायने के तहत. श्लोक 17 - वह इस अध्याय का है - 29:17. "फिर भी थोड़ी देर में लेबनान एक फलदार खेत बन जाएगा, और फलदार खेत जंगल के समान प्रतीत होगा ," और बताते हैं, लेबनान, यशायाह 10:34 का प्रकाश, जो फिर से महान अश्शूर साम्राज्य का एक प्रकार प्रतीत होता था कमज़ोरी के स्तर तक कम होने वाला है, जबकि दूसरी ओर, इज़राइल अधिक शक्तिशाली हो जाएगा।

पृष्ठ 23 के शीर्ष पर: वहां संदर्भों की एक श्रृंखला है, लेकिन आपने देखा है कि पहला श्लोक 18 से 24 है, इस खंड को हम देख रहे हैं। वह इसे इस प्रकार देखता है: सन्हेरीब की प्रगति के बारे में भविष्यवाणियों के बीच भविष्यवाणियों की एक प्रमुख श्रृंखला, और इस विनाश के समकालीन प्रभावों के संबंध में बाद में विनाश, ये इज़राइल की पुष्टि के वादे के साथ शुरू होते हैं। याकूब अब अपने बच्चों को देखकर लज्जित नहीं होगा - याकूब अपने बच्चों में क्या देखता है? आप देख सकते हैं कि यह पद 23 में है - जो सन्हेरीब द्वारा नष्ट नहीं किए गए, लेकिन उसके बीच में "वे मेरे नाम को पवित्र करेंगे और परमेश्वर का भय मानेंगे।" नम्र लोग प्रभु में अपना आनन्द बढ़ाएंगे," और फिर अगला पैराग्राफ: 20 से 21 जोड़ता है, "उपहास करने वाला और वे सभी जो अधर्म की प्रतीक्षा करते हैं और धर्मियों को दूर कर देते हैं, समाप्त हो जाता है" जिसका अर्थ है कि एक संपूर्ण श्रद्धा और भय ने पकड़ लिया है उन्हें - एक परिणाम जो 2 राजाओं 18 और 19 में नहीं देखा गया, लेकिन इस ऐतिहासिक विवरण के लिए एक मूल्यवान पूरक है। दूसरे शब्दों में, पायने जो कह रहा है वह यह है कि जब ईश्वर हस्तक्षेप करता है और अश्शूरियों से बचाता है, तो जो लोग इसका पालन करते हैं उन पर इसका प्रभाव पड़ता है, जिसका वर्णन यहां यशायाह 29 में किया जा रहा है। उनका कहना है कि इसका उल्लेख 2 राजाओं में नहीं किया गया है। , लेकिन यहाँ यही दिख रहा है।

इस तरह का दृढ़ विश्वास उन मामलों पर सामने आएगा जो धार्मिक होने के साथ-साथ नैतिक भी होने चाहिए। 30:22: "और तुम अपनी सब चाँदी की खुदी हुई मूरतों को अशुद्ध करना, और अशुद्ध वस्तुओं को फेंक देना।" अधिक सकारात्मक रूप से, 29:24

भविष्यवाणी करता है कि आत्मा में गलती करने वालों को समझ आनी चाहिए, क्योंकि जब दोषी पापी पूछता है, 33:14 में, हममें से कौन भस्म करने वाली आग में रह सकता है?, यशायाह ने पहले ही श्लोक 15 और 16 में उत्तर दिया था: वह जो भविष्यवक्ता के निर्देशों के अनुसार ईमानदारी से चलता है। हालाँकि, यशायाह 29:18 पुस्तक के शब्दों को सुनने वाले बहरों की बात करता है - विचार यह है कि दैवीय पुनर्स्थापना सच्ची रोशनी लाती है। इन लोगों को सच्ची समझ इसलिए आई क्योंकि ईश्वर ने हस्तक्षेप किया और उद्धार किया, और इसलिए वे उस चित्र को देखते हैं जो आप लेबनान को एक फलदार खेत में बदलने के रूप में देखते हैं, जो अश्शूर के कमज़ोर होने के प्रतीक के रूप में है, और फलदार खेत को एक जंगल के रूप में सम्मानित किया जाना दर्शाता है इज़राइल ताकत हासिल कर रहा है, और फिर उसके परिणाम श्लोक 18 से 24 में वर्णित हैं। तो, हम आंकड़ों की व्याख्या की इस चीज़ पर वापस आ गए हैं। बहुत कठिन। हाँ।

मुख्य व्याख्यात्मक अंक: "फलदायी खेत," कमज़ोरी या ईश्वर की खेती का प्रतीक क्या यह दर्शन यशायाह के जीवनकाल में ही पूरा हुआ? ठीक है, मुझे नहीं पता कि क्या आप कह सकते हैं कि किसी ऐसी चीज़ की भविष्यवाणी करने के लिए किसी आंकड़े का उपयोग करना संभव या असंभव होगा जो अधिक दूर के भविष्य के बजाय अधिक तत्काल भविष्य में होने वाला है - मेरा मतलब है कि सिद्धांत रूप में, यह अभी भी भविष्यवाणी है, इसलिए मुझे नहीं पता. लेकिन देखिए, मेरे लिए समस्या यह है कि फलदायक क्षेत्र के विचार का क्या मतलब है। मेरे लिए, यशायाह के विचारों के संदर्भ में फलदायी क्षेत्र उनके अपने लोग हैं। यह कमजोरी का प्रतीक नहीं है. फलदायी क्षेत्र. नहीं, दाख की बारी परमेश्वर की प्रजा थी जिसकी वह देखभाल करता था और जिसकी वह खेती करता था और प्रतिज्ञा करता था। और वह जो कह रहा है वह यह है कि लेबनान फलदायी क्षेत्र बनने जा रहा है। इस्राएल तो मेरा उपजाऊ क्षेत्र *रहा है*, परन्तु तुम जंगल बनने जा रहे हो। आप कुछ समय के लिए मेरी प्रत्यक्ष भागीदारी और कार्य के इस क्षेत्र से बाहर रहेंगे। आप देखिए, यशायाह ताकत और कमजोरी के प्रतीकों का उपयोग करता है - उपजाऊ क्षेत्र को कमजोरी के रूप में - जंगल

को ताकत के रूप में। खैर, आप जहां तक चाहें उस पर बहस कर सकते हैं।

मुझे लगता है कि यह उन सबके साथ फिट बैठता है, और दूसरी बात यह है कि आप अध्याय 28 में श्लोक 17 को कैसे भी लेते हैं, आपको अध्याय 32 में श्लोक 15 लेना चाहिए। आप उसी कल्पना पर वापस आते हैं। अध्याय 32 में आपने पढ़ा, "जब तक आत्मा ऊपर से हम पर न डाला जाए, और जंगल फलवन्त बारी न बन जाए, और फलवन्त बारी जंगल न बन जाए।" और मुझे ऐसा लगता है कि ऊपर से हम पर जो आत्मा उंडेला जा रहा है, वह पिन्तेकुस्त है - पवित्र आत्मा का आगमन और पवित्र आत्मा के आगमन के साथ ही आपको यह उलटाव मिलता है - अन्यजातियों को ईश्वर की मुक्ति गतिविधि के क्षेत्र में लाया जा रहा है, लेकिन पायने अभी भी इसे अश्शूरियों से जोड़ने की कोशिश करता है - मुझे लगता है कि 32:15 के साथ यह अधिक कठिन है - लेकिन 32:15 में भी वही आंकड़े हैं जो 29:17 में हैं।

चेल्सी रेवेल द्वारा प्रतिलेखित
कार्ली गीमन द्वारा संपादित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा अंतिम संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः वर्णित